साहित्य अकादमी व नेपाली साहित्य सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी आयोजित

दार्जिलिंग। 31 अगस्त और 1 सितंबर को नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जिलिंग के शताब्दी वर्ष समारोह के शुभ अवसर पर साहित्य अकादमी (नई दिल्ली) और नेपाली साहित्य स मेलन (दार्जिलिंग) द्वारा आयोजित पहली संगोष्ठी सुधापा प्रेक्षागृह में आयोजित किया गया। नेपाली साहित्य सम्मेलन के महासचिव महेंद्र प्रधान द्वारा संचालित इस समारोह का पहला उद्घाटन सत्र नेपाली साहित्य स मेलन के अध्यक्ष डॉ. चंद्रकुमार राई की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उद्घाटन के प्रथम सत्र में के. श्रीनिवास राव सचिव साहित्य अकादमी, सदस्य नेपाली सलाहकार समिति साहित्य अकादमी प्रेम प्रधान, नेपाली साहित्य सम्मेलन के महासचिव महेंद्र कुमार प्रधान की उपस्थिति में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में के श्रीनिवास राव ने स्वागत भाषण दिया, जबकि प्रेम प्रधान ने उद्घाटन भाषण दिया। वहीं डॉ. सीके राई ने अध्यक्ष का भाषण दिया और महेंद्र कुमार प्रधान ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र में लेखक हरेन आले की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में महेश प्रधान ने कविता एवं साहित्य में नेपाली साहित्य सम्मेलन का योगदान, सुकराज दियाली ने नेपाली लघुकथा में नेपाली साहित्य सम्मेलन का योगदान, डॉ. नीना राई ने नेपाली साहित्य में योगदान विषय पर चर्चा की। नेपाली नाटक साहित्य पर सम्मेलन एवं सचिन राई द्वारा पुरस्कृत कहानी कविता एवं नाटक पेपर प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार पहले दिन का कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और समारोह के दौरान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों की प्रदर्शनी एवं बिक्री वितरण भी किया गया। आज के दूसरे सत्र में एनईएसएएस के महासचिव महेंद्र प्रधान ने साहित्यिक सभा के दूसरे दिन का औपचारिक संचालन किया। दूसरे सत्र के पहले कार्यक्रम में, जिसकी अध्यक्षता लेखक, गीतकार, नाटककार नंद हांगकांग ने की। कुशल घिमिरे ने सबसे पहले निबंध साहित्य में नेपाली साहित्य सम्मेलन के योगदान पर अपना वर्किंग पेपर प्रस्तुत किया। इसके बाद अध्यक्ष के निर्देशानुसार साहित्यकार योगेश खाती द्वारा नवलेखन एवं नेपाली साहित्य सम्मेलन विषय पर कार्यपत्र प्रस्तुत किया गया तथा अध्यक्ष के भाषण के बाद दूसरा सत्र समाप्त हुआ। तीसरा सत्र लेखक एम. पथिक की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। भाषाई अध्ययन और नेपाली साहित्य सम्मेलन पर शोधपत्र प्रस्तुत करने के बाद शोधपत्र की प्रस्तोता डॉ. वीणा हांखिम ने आंदोलन में साहित्य सम्मेलन की भूमिका पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र के इस साहित्यिक आयोजन में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष और नेपाली भाषा सलाहकार समिति, साहित्य अकादमी के पूर्व समन्वयक डॉ. जीवन नामदुंग ने साहित्य अकादमी और के बीच साहित्यिक सहयोग की अर्धशताब्दी पर अपना पेपर प्रस्तुत किया। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जिलिंग ने संयुक्त रूप से नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जिलिंग के पावन उत्सव के अंतिम चरण एवं चतुर्थ सत्र का आयोजन साहित्यकार सतीश रसाइली की अध्यक्षता में किया। गीता छेत्री ने महिला आंदोलन एवं नेपाली साहित्य सम्मेलन विषय पर वर्किंग पेपर प्रस्तुत किया। इसके बाद लेखक भक्तराज सुनुवर मुखिया ने दियालो के कुछ संपादकीय पर एक वर्किंग पेपर प्रस्तुत किया।

साहित्य सम्मेलन के अंतिम दिन के अंतिम चरण का कार्यपत्र प्रस्तुत करने के बाद साहित्य अकादमी के उप सचिव एन. सुरेश बाबू ने अध्यक्ष सहित वर्किंग पेपर प्रस्तुत करने वाले सभी लेखकों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा उपस्थित सभी भाषा प्रेमियों एवं साहित्य प्रेमियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया। दोनों दिन, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित नेपाली और अंग्रेजी पुस्तकें भी बिक्री और वितरण के लिए रखी गईं, जबकि नेपाली साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित रचनाएँ भी प्रदर्शनी के लिए रखी गईं। पत्रकार सबिता संकल्प ने बताया कि अकादमी के सदस्यों ने कहा कि समारोह में उपस्थित लेखक अपने लिए किताबें ले गये।